मॉड्यूल '1' – कहानीः विशेष अध्ययन
(एम.एच.डी.: 9 से 12 तक)

एम.एच.डी.–09
कहानीःस्वरूप और विकास
सत्रीय कार्य
(सभी खंडों पर आधारित)

पाठ्यक्रम कोड : एम.एच.डी.–09
सत्रीय कार्य कोड : एम.एच.डी.–09/टी.एम.ए./2021–2022
कुल अंक : 100

खंड 'क'

निम्नलिखित में से किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर दीजिए। 15 × 4 = 60

1. 'कथा' की नई अवधारणा पर प्रकाश डालिए।

2. हिंदी कहानी के उद्भव में गद्य के विकास की भूमिका का निरूपण कीजिए।

3. यशपाल की कहानी 'पराया सुख' के आधार पर वस्तु और शिल्प पर विचार डालिए।

4. ब्रिटेन में कहानी के विकास पर एक निबंध लिखिए।

5. भारतीय भाषाओं में आधुनिक कहानी के सूत्रपात की चर्चा कीजिए।

खंड 'ख'

6. निम्नलिखित पर टिप्पणी लिखिए : 10 × 4 = 40

   (क) नई कहानी

   (ख) अमेरिका में कहानी

   (ग) 'पंचतंत्र' और 'हितोपदेश'

   (घ) प्रमुख अफ्रीकी कहानीकार

एम.एच.डी.–10
प्रेमचंद की कहानियाँ
सत्रीय कार्य
(सभी खंडों पर आधारित)

पाठ्यक्रम कोड : एम.एच.डी.–10
सत्रीय कार्य कोड : एम.एच.डी.–10 / टी.एम.ए. / 2021–2022
कुल अंक : 100

सभी प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

1. निम्नलिखित में से किन्हीं दो की संदर्भ सहित व्याख्या कीजिएः 10 x 2 = 20

(क) कामतानाथ ने दूरदर्शिता का परिचय दिया – नुकसान की एक ही कही। हममें से एक को कष्ट हो, तो क्या और लोग बैठे देखेंगे? यह अभी लड़के हैं, इन्हें क्या मालूम समय पर एक रुपया एक लाख का काम करता है? कौन जानता है, कल इन्हें विलायत जाकर पढ़ने के लिए सरकारी वजीफा मिल जाए, या सिविल सर्विस में आ जाएँ। उस वक्त सफर की तैयारियों में चार–पाँच हजार लग जाएँगे। तब किसके सामने हाथ फैलाते फिरेंगे? मैं यह नहीं चाहता कि दहेज के पीछे इनकी जिदंगी नष्ट हो जाए।

(ख) दुनिया सोती थी पर दुनिया की जीभ जागती थी। सबेरे देखिए तो बालक –वृद्ध सब के मुँह से यही बात सुनायी देती थी। जिसे देखकर वही पंडित जी के इस व्यवहार पर टीका–टिप्पणी कर रहा था, निंदा की बौछारें हो रही थीं, मानों संसार से अब पापी का पाप कट गया। पानी को दूध के नाम से बेचने वाला ग्वाला, कल्पित रोजनामचे भरने वाले अधिकारी वर्ग, रेल में बिना टिकट सफर करने वाले बाबू लोग, जाली दस्तावेज बनाने वाले सेठ और साहूकार, यह सब के सब देवताओं की भांति गर्दनें चला रहे थे। जब दूसरे दिन पंडित अलोपीदीन अभियुक्त हो कर कांस्टेबलों के साथ, हाथों में हथकड़ियाँ, हृदय में ग्लानि और क्षोभ भरे, लज्जा से गर्दन झुकाये अदालत की तरफ चले तो सारे शहर में हलचल मच गयी। मेलों में कदाचित् आँखें इतनी व्यग्र न होती होंगी। भीड़ के मारे छत और दीवार में कोई भेद न रहा।

(ग) स्त्रियाँ गा रही थीं, बालक उछल रहे थे। और पुरुष अपने अँगोछों से यात्रियों को हवा कर रहे थे। इस समारोह में नोहरी की ओर किसी का ध्यान न गया, वह अपनी लठिया पकड़े सब के पीछे सजीव आशीर्वाद बनी खड़ी थी। उसकी आँखें डबडबायी हुई थीं, मुख से गौरव की ऐसी झलक आ रही थी मानों वह कोई रानी है, मानों यह सारा गाँव उसका है, वे सभी युवक उसके बालक हैं। अपने मन में उसने ऐसी शक्ति, ऐसे विकास, ऐसे उत्थान का अनुभव कभी न किया था।

2. प्रेमचंद की कहानियों में चित्रित स्वाधीनता आंदोलन पर प्रकाश डालिए। 16

3. प्रेमचंद की स्त्री दृष्टि को रेखांकित कीजिए। 16

4. एक कहानीकार के रूप में प्रेमचंद के योगदान की चर्चा कीजिए। 16

5. 'विध्वंस' कहानी की मूल संवेदना को स्पष्ट कीजिए। 16

6. 'दो बैलों की कथा' संघर्ष बनाम मुक्ति की कथा है– इस कथन की समीक्षा कीजिए। 16

एम. एच. डी.–11
हिन्दी कहानी
सत्रीय कार्य
(सभी खंडों पर आधारित)

पाठ्यक्रम कोड : एम.एच.डी.–11
सत्रीय कार्य कोड : एम.एच.डी.–11 / टी.एम.ए. / 2021–2022
कुल अंक : 100

सभी प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

1. निम्नलिखित में से किन्हीं दो की संदर्भ सहित व्याख्या कीजिएः 10x2=20

(क) अब शकलदीप बाबू और भी व्यस्त रहने लगे। पूजा–पाठ का उनका कार्यक्रम पूर्ववत जारी था। लोगों से बातचीत करने में उनको काफी मजा आने लगा और वे बातचीत के दौरान ऐसी स्थिति उत्पन्न कर देते कि लोगों को कहना पड़ता कि नारायण अवश्य ही ले लिया जाएगा। वे अपने घर पर एकत्रित नारायण तथा उसके मित्रों की बातें छिपकर सुनते और कभी–कभी अचानक उनके दल में घुस जाते तथा जबरदस्ती बात करने लगते। कभी–कभी नारायण को अपने पिता की यह–हरकत बहुत बुरी लगती और वह क्रोध में दूसरी ओर देखने लगता। रात में शकलदीप बाबू चौंककर उठ बैठते और बाहर आकर कमरे में लड़के को सोते देखने लगते या आगंन में खड़े होकर आकाश को निहारने लगते।

(ख) एकाएक ही मेरा मन कटु हो उठता है– यह तो है वह व्यक्ति, जिसने मुझे अपमानित करके सारी दुनिया के सामने छोड़ दिया था महज उपहास का पात्र बनाकर! क्यों नहीं मैंने उसे पहचानने से इन्कार कर दिया? जब वह मेज के पास आकर खड़ा हुआ तो क्यों नहीं मैंने कह दिया कि माफ कीजिए, मैं आपको पहचानती नहीं। जरा उसका खिसियाना तो देखती! वह कल भी आएगा। सच, मुझे साफ–साफ मना कर देना चाहिए था कि मैं उसकी सूरत भी नहीं देखना चाहती, मैं उससे नफरत करती हूँ!.....

(ग) अगली सुबह सावित्री घर में नहीं थी और राजदेव को लग रहा था, हथेली के वे आँसू सूखे नहीं हैं। वह जगह अभी भी भीगी हुई है। वह बार–बार उस स्थान अपनी आँखों से स्पर्श कराता और भावुक हो जाता। अपने बाल नोंचता और फुसफुसाता, 'मैं पापी..... मैं पापी....।' वह अपने कमरे में घुसता तो सूना महसूस करता। हालाँकि सभी कुछ उसी तरह था, केवल एक बक्सा नहीं था पर लगता ऐसा था कि कमरे की छत कुछ नीचे खिसक आई है और कोई दीवार कम हो गई है। वह तकिए में मुँह, छिपाकर लेट गया।

2. 'तीसरी कसम' कहानी का मूल्यांकन कीजिए। 16

3. नई कहानियाँ आन्दोलन की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि पर प्रकाश डालिए। 16

4. 'बहिर्गमन' कहानी की अन्तर्वस्तु को स्पष्ट कीजिए। 16

5. 'एक जीता–जागता व्यक्ति' के कथ्य और शिल्प का विवेचन कीजिए। 16

6. 'हरी बिन्दी' कहानी में अभिव्यक्त स्त्री स्वतंत्रता पर प्रकाश डालिए। 16

एम. एच. डी.–12
भारतीय कहानी
सत्रीय कार्य
(सभी खंडों पर आधारित)

पाठ्यक्रम कोड : एम.एच.डी.–12
सत्रीय कार्य कोड : एम.एच.डी.–12 / टी.एम.ए. / 2021–2022
कुल अंक : 100

सभी प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

1. निम्नलिखित में से किन्हीं दो की संदर्भ सहित व्याख्या कीजिए: 10x2=20

(क) अप्पू ताड़ के पत्ते से बना छाता कन्धे पर रखकर उसकी रंगीर डण्डी पर थैली लटकाये आँगन से चल पड़ा। फाटक पार करने पर फिसलकर गिरने को हुआ, लेकिन गिरा नहीं। मुड़कर देखा कि किसी ने देखा तो नहीं। ओसारे के दरवाजे के सहारे दीदी उसे ही एकटक देख रही थी........ यह डरानेवाली आँखे दीदी को कैसे मिलीं। जब उसने मुड़कर देखा तो दीदी ने कछुए की तरह सिर अन्दर खींच लिया।
'' दीदी भी कैसी पगली है।........''
खेत के उस पार कुट्टिशंकरन जंगली अण्डी का पत्ता तोड़कर उसके रस के बुलबुले उड़ाता हुआ खड़ा था। उसकी थैली में दो आँवले थे। छोटा आँवला उसने अप्पू को दिया। छोटा होने पर भी खूब मीठा था।
एक सूखा नाला, पगडण्डी और छोटा–सा टीला पार करके उसके स्कूल जाना था।
टीला पार करते डर लगता था। बहुत–सी गायें भी होंगी। कोई बात नहीं। कभी पास के बड़े घर का साँड भी वहाँ होगा.... अप्पू ने उसे नहीं देखा है। .... न दीख पड़े........।

(ख) उसके बाद वे रोज की तरह बाजार भी गए थे। हालांकि सवेरे बड़ा लड़का नौकर के साथ बाजार जाकर जरूरत की सारी चीजें ले आता है। मगर जब लड़के ऑफिस चले जाते तो अविनाश एक बार फिर फटाफट बाजार घूमने निकल जाते और कुछ न कुछ अखाद्य चीज लाकर हाजिर कर देते, जिसे वे सब छूते भी नहीं।......थोड़ा पुई साग, मुखी कचू, मौरला पुटी ये सब चीजें भला कोई आदमी खाता है। नहीं खाता तो फिर बाजार में बिकती क्यों हैं! छोड़ो, कोई खाए न खाए, अविनाश ये सब अकेले खाएंगे। आजकल वे शैलबाला को समझाते रहते हैं कि ये सब चीजें खाने से आदमी की सेहत ठीक रहती है। मगर उन्हें तो जैसे इन बातों से कोई मतलब ही न हो। फैशन परस्त बेटे–बहुओं की बातों पर ज्यादा ध्यान देती हैं। मगर अविनाश को उनके इस तरह अपनी बातें अनसुनी चली जाने का गम नहीं है। आज बहु के सामने ही उन्होंने खूब सारी चच्चड़ी खाई।

(ग) पिछली गर्मियों में बहुत दिनों के बाद लोगों को जीवण की भारी, बुलंद और कर्कश आवाज सुनने को मिली थी। वैसे वह आवाज कहीं–कहीं से कमजोर हो गई थी। उसमें परिचय तो था परंतु सघनता नहीं थी। इसलिए उसकी आवाज को बुलंद करना, अतिशयोक्तिपूर्ण लगता है। लेकिन कुल मिलाकर यही तो कहना है कि यह आवाज वही है, जो बुलंद थी। रास रमते गरबी का अंतरा उठाती हुई जो आवाज सारे चौगान में और मंदिर के शिखर तक छा जाती थी, वह आवाज एकदम धुंधली भला कैसे हो सकती है। इसलिए तो उस आवाज को सुनकर सब चौंक उठे थे। सारे गांव को उल्टा–सीधा कहने वाले पंच उस दिन मीठी, सलाह देने गए थे फिर भी वे जीवण से आंखें नहीं मिला पा रहे थे। उसने सबको खरी–खरी सुना दी। क्या बात लेकर आए हैं! क्या समझते हैं सब लोग मुझे? और सब लोग नीचा मुंह करके चले गए थे। जीवण अपने घर की दहलीज पर अकेला खड़ा रह गया था। अपने घर से किसी को चले जाने के लिए कहने की घटना उसके जीवन में पहली बार घटी थी। पहले तो उसका घर अतिथियों के स्वागत के लिए प्रसिद्ध था।

2. 'दीदी' कहानी के कथानक का विश्लेषण कीजिए। 16

3. 'ट्रेडिल' कहानी के आधार पर मालिक और कर्मचारी के संबंधों का विश्लेषण कीजिए। 16

4. आदिवासी जीवन के संदर्भ में 'बघेई' कहानी का विश्लेषण कीजिए। 16

5. आधुनिक भावबोध के संदर्भ में 'चिता' कहानी का मूल्यांकन कीजिए। 16

6. 'जवाबी कार्ड' कहानी के पात्रों की चारित्रिक विशेषताओं पर प्रकाश डालिए। 16